Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

शिक्षा में कलाओं की अवधारणा

प्रो. अजय कुमार जैतली
विभागाध्यक्ष दृश्य कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।
हिना यादव
शोध.छात्रा, दृश्य कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 5, Issue 2
Page Number : 47-51

Publication Issue :
March-April-2022

Article History
Accepted : 15 March 2022
Published : 30 March 2022

सरांश- आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सामन्जस्य से ओतप्रोत कला का सबसें विशुद्ध रुप यदि कहीं अपने समृद्ध अवस्था में मिलता है तो, वह भारतवर्ष है। वर्तमान में कलाओं के अध्ययन को दो तरह से देखा जा सकता है– पहला स्वतन्त्र विषय के रूप में तथा दूसरा अन्य विषयों को सिखाने के 'माध्यम' के रूप में। कला और शिक्षा दोनों ही राष्ट्रीय महत्व के विषय हैं। 'कला शिक्षा' का सबसे आसान 'अभिव्यक्ति' व ' अधिगम ' का प्रथम सशक्त माध्यम है। कलाकार नन्दलाल बोस का मानना है ''कि कला शिक्षण का उद्देश्य कलाकार का निर्माण नहीं बल्कि कलाबोध और कलात्मक व्यवहार को विकसित करना है। इसके लिए अलग से कला विषय की जरुरत नहीं बल्कि हर विषय के शिक्षण मे, शाला की साज–सज्जा में, और दैनिक व वार्षिक गतिविधियों में कलात्मकता का पुट समाहित करना अधिक उपयोगी है।'' एक दूरदर्शी कलाकार द्वारा 'कला शिक्षा' के मूल्य को शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पहले ही अनुभव कर लिया गया था। बदलते परिदृश्य में वैश्विक स्तर पर पहुच सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी ही प्रथम विकल्प है। विभिन्न शिक्षा समितियों द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए समय–समय पर अनुशंसायें (Recommendations) की गई। एक सुदृढ़ शिक्षा प्रणाली जो भारतवर्ष को विकासशील से विकसित भारत बनने में सीधे योगदान देती है। मनुष्य एकमात्र प्राणी है जिसमें कलात्मकबोध और सौन्दर्यबोध पाया जाता है। इस धरती पर कदम रखने से लेकर आज आधुनिक समाज में सर्वे–सर्वा बनने तक का सफर उसने अपनी कलात्मक बौद्धिक क्षमता के बल पर ही तय किया। आदिमानव से आदर्श-मानव के पीछे, लगातार मस्तिष्क विकास, उसके समाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, स्थिति को सुदृढ़ बनाती गयी। कलाओं को अभिव्यक्ति की एक भाषा के रूप में देखा जा सकता है जो ललित कला (दृश्यकला या प्रदर्शन कला) या उपयोगी कला (हस्तकला, यांत्रिक कला) के रुप में होती हैं। कलाओं को शिक्षा में अन्य विषयों के साथ संयोजित करके विषय की अर्मूत अवधारणा को मूर्त रूप दिया जा सकता है। कला के इस सहयोग द्वारा अमुक विषय के प्रति एक खास समझ व दीठ विकसित होती है, साथ ही ज्ञान में विस्तार भी होता है। वर्तमान समय में कलाओं के समेकन (अन्य विषयों के साथ कला के एकीकरण) द्वारा प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा में शिक्षण को प्रभावी बनाने का प्रयास जारी है, जिसमें नि:सन्देह कलाएँ हमेशा की तरह अपनी उपस्थिति से शिक्षण को नये आयाम प्रस्तुत करते हुए कुछ सार्थक बदलाव चिन्हित करेंगी।

शब्द कुंजी- शिक्षा, कलाएँ, सौन्दर्यबोध, समेकन, मानव जीवन, अवधारणा, उपादेयता।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्रस्तावना- मनुष्य सबसे पहले एक कलाकार है तत्पश्चात मनुष्य। कलात्मक क्षमता जन्म से ही उसके पास होती है। जब वह शिशु होता है तब बिना किसी भाषा के अपनी माँ से संवाद करता है। मानव शुरूआत से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति होने के कारण अनगिनत ऐसे कार्यों को अनजाने ही किया, जिसका परिणाम उसे और अधिक उत्सुक बनाता गया उदाहारण स्वरुप मानव ने आग का अविष्कार दो पत्थरो को रगड़कर किया।[i] उसने दो समान आकार वाले सूर्य और चन्द्रमा के न सिर्फ आकार बल्कि उनके स्वभाव व उनसे पड़ने वाले प्रभाव को भी समझना शुरू किया। यह सम्भवत: तभी हुआ जब मानव अपने आस–पास में होने वाली समस्त गतिविधियों के प्रति सचेत रहा और प्रकृति में होने वाली किसी भी क्रिया के 'कारण' और 'परिणाम' का अवलोकन हर क्षण करता रहा। यहां भाषा के रूप में पहले कलाएँ रहीं या यूं कहें कि भाषा की कमी को कलाओं ने पूरा किया। मानव प्रवृत्ति है कि जिससे जितनी बार मुलाकात होती है या जिसके सानिद्ध में वह ज्यादा समय व्यतीत करता है उससे उसका सम्बन्ध आत्मीय होता जाता है और वह उससे सहजता महसूस करता है। वह अपने रहने/ठहरने लायक गुफाओं को गाँवो मे बदलने के बाद जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में जुट गया। कला ने मानव को वह साधन दिया जिससे वह जीवन क्षेत्र में सफल और अर्थपूर्ण जीवन जीने में समर्थ बने।

हमारे धर्मशास्त्रों में 'ज्ञान' एवं 'कला' दोनों की देवी 'सरस्वती' है। पूजा अर्चना हेतु यज्ञ करते समय पूजा की सामग्री में कलावा (सूत का लच्छा जो मांगलिक अवसरों पर कलाई पर बाधा जाता है।) यहां पर कलावा वस्त्र के प्रतीक के रूप में होता है परन्तु कच्चे सूत का यह कलावा हमें कला की महत्ता की याद दिलाता है जिसका मतलब कलावा को कलाई में बाधकर हम कलापूर्ण होना सीखते हैं। करमूल अर्थात कलाई हमारे हाथों का आधार सिद्ध होती है जो हमारे अन्दर छिपे कला भावों को मूर्त रूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।[ii]

पुराकाल में भारत विश्वगुरू की उपाधि से विभूषित रहा इसके पीछे का महत्वपूर्ण कारण यहां की उन्नत व्यापक शिक्षा व्यवस्था रहीं। जहां शास्त्रीय ज्ञान के साथ–साथ जीवनपयोगी लौकिक ज्ञान अर्थात कला का सम्यक ज्ञान का समावेश होना था। वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली औपनिवेश काल की देन है। जब हम पराधीन थे तब आक्रांताओं ने अपने औपनिवेशिक हितों की रक्षा के लिए इस शिक्षा प्रणाली को प्रारम्भ किया था।[iii] कला शिक्षा के रूप में '1850 के मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट' से कला की अकादमिक शिक्षा प्रारम्भ होती है। आगे इसी क्रम में '1854 कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट', '1857 मुम्बई स्कूल ऑफ आर्ट', '1875 लाहौर स्कूल ऑफ आर्ट' भी इसी तर्ज पर खोले गये। हमारे भारतीय संस्कृति में तो खुले आसमान के नीचे प्रकृति के सानिद्ध में कलाओं की शिक्षा प्रदान करने की खास परम्परा रही है, जिस अनूठी परम्परा को कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1901 में शान्तिनिकेतन के एक छोटे स्कूल के रूप में फिर से जीवित किया। वर्तमान में शान्तिनिकेतन कला, संगीत, नाटक जैसी सांस्कृतिक कलाओं के साथ शिक्षा का 'हब' है। 1919 ई. में कविवर ने यहीं कला के एक स्कूल 'कला भवन' की नीव भी रखीं जो 1921 ई. में स्थापित विश्व भारती विश्वविद्यालय का हिस्सा बन गया।[iv] भारत सरकार द्वारा 1954 में कलाओं के उत्थान के लिए 'ललित कला अकादमी' नाम की एक स्वायत्त संस्था का गठन किया गया, जिसका उद्घाटन हमारे पहले शिक्षा मंत्री 'मौलाना अबुल कलाम अज़ाद' द्वारा किया गया था।[v]

मनुष्य आन्नद की प्राप्ति और ज्ञान के लिए जितने उपायों का विकास किया, उसमे भाषा कला का विशेष स्थान है। साहित्य, दर्शन, विज्ञान और प्रकृति के नाना विषयों की चर्चा भाषा को माध्यम बनाकर ही की जाती है। साहित्य मनुष्य को अभिव्यक्ति देता है पर उसकी अभिव्यक्ति का क्षेत्र सीमित होता है। उस अभाव की पूर्ति करती

हैं ललित कलाएँ– चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्यकला, संगीत कला एवं काव्यकला। जैसे साहित्य की अभिव्यक्ति की अपनी विशिष्टता है, वैसे ही चित्र, मूर्ति, नृत्य व अन्य ललित कलाओं की भी।[vi] भारत में कला शिक्षा एक विषय है, जिसकी खुद की एक भाषा व शब्दावली के साथ सिद्धान्त भी है। कला शिक्षा में कला से जुड़े सभी तथ्यों विभिन्न आयामों को समझने के कुछ सिद्धान्त व प्रस्तुति एवं प्रदर्शन की खास विधियाँ भी होती हैं। कला शिक्षा भी अन्य विषयों की तरह एक विषय के रुप में रहा मगर उतना पसन्दीदा व बाकी विषयों की तरह नहीं। इस खास विषय को पढ़ने वाला जरूरी नही कि कलाकार ही हो। कला जीवन के साथ–साथ अग्रसर होती है। कला 'सीखने' और सिखाने' की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनकर हमारे संस्थानों के पाठ्यक्रम को रूचिकर बना रहीं है।

''29 जुलाई 2020 को हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' की घोषणा की गई। यह शिक्षा नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक 'के. कस्तूरीरंगन' की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है।''[vii] इस नई शिक्षा नीति के आते ही व्यापक चर्चाए प्रारम्भ हो गई। सवाल ये सामने है कि आखिर 34 साल बाद नई शिक्षा नीति लाने की आवश्यक्ता क्यों महसूस हुई एवं 1986 की शिक्षा नीति में ऐसी कौन सी त्रुटियाँ रह गयी थी जिसे नयी शिक्षा नीति के द्वारा दूर किया गया।[viii] इस नीति में कला और शिक्षा में कुछ वांछनीय बदलाव किए गए है। अभी तक कला, संगीत, क्राफ्ट, स्पोर्ट्स, योग आदि को सहायक पाठ्यक्रम (Co Curricular) एक्टिविटी के तौर पर पढ़ते आए हैं। अब ये मुख्य पाठ्यक्रम का हिस्सा होंगे इन्हे एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटी भर नहीं कहा जायेगा।[ix] कला अब रोजगारपरक और व्यावसायिक भी होगी। नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा व कला के माध्यम से अन्य विषयों को रूचिकर बनाने की एक विशेष पहल शामिल की है जिसमें कला को अन्य सभी विषयों के साथ समेकित किया जा सकता है अर्थात विभिन्न विषयों के सीखने–सिखाने में कला संयोजन। भाषा, सामाजिक अध्ययन, विज्ञान और गणित जैसे विषयों को कला के साथ जोड़कर उस विषय की जटिलता व उसकी अवधारणा को बेहद सरल व सुगम बनाया जा सकता है। कलाओं द्वारा विषयों को रुचिकर बनाकर एक ऐसा माहौल तैयार किया जाता है जिसमें न सिर्फ उनका शरीर बल्कि ह्रदय और मस्तिष्क भी एक साथ काम करते है।[x]

हमारे समाज में उपस्थित प्रत्येक वस्तुए किसी कलात्मक मानव मस्तिष्क के देन है। हम सुबह उठकर जिस प्याले में चाय पीते है। हम चाय पीते–पीते दुनियाँभर की खबर अपने घर में जिस न्यूजपेपर के माध्यम से पाते हैं। क्या हमें मालूम है कि पहली बार न्यूज को अखबार में छापने का विचार किसका था और उसे क्यो जरूरत महसूस हुई अखबार की? हम सुबह ऑफिस पहुचने के लिए जिस पुल से होकर जाते हैं, वो भी किसी व्यक्ति के मस्तिष्क की उपज है। जरुरत की हर वो चीज जो आज आपके पास है जिसका इस्तेमाल आप आज बड़ी आसानी से कर रहे हैं, जिससे आप आनन्दित हो रहे, वो सबसे पहले किसी मानव के मस्तिष्क के कैनवास पर बनी है तत्पश्चात वास्तविक जगत में अपने वास्तविक रुप में आज हमारे सामने हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सृजन दो बार होता है पहला मस्तिष्क में दूसरा वास्तविक जगत में। 'कला' को लेकर हमेशा से आम लागों की एक विशिष्ट अवधारणा रही है कि ''कला बच्चों को पठन–पाठन से दूर कर देती है, जिससे बच्चों का शैक्षणिक विकास अवरूद्ध हो जाता है। शिक्षाविदों ने यह सिद्ध किया है, कि कला शिक्षा कोई पृथक ज्ञान नहीं है बल्कि हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा है जिसका प्रयोग हम किसी न किसी रूप में हर क्षण करते हैं।''[गप] अवधारणाओं के निर्माण में अनेक कारक होते है। जिसमें बौद्धिक कारक, सामाजिक कारक साथ में हमारी शिक्षा व्यवस्था भी एक महत्वपूर्ण कारक रहीं। ''हमारे देश में विश्वविद्यालयों की ओर से अब तक ऐसी कोई व्यवस्था

नहीं की गई है, वह नितान्त अपर्याप्त है। इसका एक कारण सम्भवतः यह है कि हमारे यहां अनेक लोगों की मान्यता है की कला–साधन मात्र पेशेवर कलाकारों का काम है, साधारण आदमी का इससे कुछ लेना–देना नहीं है। "जिसका परिणाम यह निकलता है कि शहर में लगने वाली कला प्रदर्शनियों से उनका कोई वास्ता नहीं और भूले–भटके अगर कभी कला–दीर्घाओं मे पहुच भी जाएं तो उन्हे सौन्दर्य बोध, कलाबोध नहीं होता अर्थात कला के प्रति उनकी समझ बिल्कुल अबूझ पहेली सी होती है।"[xii]

शोध के उद्देश्य- कलाओं द्वारा मानव जीवन में हुए सांस्कृतिक, सामाजिक विकास के क्रम को समझना। कला और शिक्षा के सम्बन्धों को विभिन्न स्तर पर रेखांकित करते हुए शिक्षा में कला की आवश्यकता, कारण व उसकी महत्ता का अध्ययन करना। समाज में कलाओं को लेकर बनी विशिष्ट अवधारणा और विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष– हमारी शिक्षा का उद्देश्य एक मानव का अगर सर्वांगीण विकास करना है, तो हमारे पाठ्यक्रम में कला का स्थान अन्यान्य पढ़ाई लिखाई के विषयों के समान ही होना चाहिए। कला शिक्षा से व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति हाती है। 'कला' और 'शिक्षा' ही एकमात्र ऐसे साधन हैं, जो अलग दीठ प्रदान करते हैं। देखने का एक खास किस्म का अपना इतिहास है। एक कलात्मक योग्यता से परिपूर्ण मनुष्य 'देखने' के खास ढंग की कला से बुना हुआ होता है। उसकी सिर्फ आँख ही देखने का कार्य नहीं करती अपितु समस्त ज्ञानेन्द्रियाँ (आँख, कान नाक, जीभ, त्वचा) किसी भी चीज को महसूस करके देखती हैं, छूकर देखती है, सुनकर देखती हैं, चखकर देखती हैं।

भूमण्डलीकरण के इस युग में कला की महत्ता को अनदेखा नहीं किया जा सकता। उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा, कला के समेकित अध्ययन से निश्चय ही प्राप्त की जा सकती है। कला संज्ञानात्मक विकास करके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को उजला स्वरूप प्रदान करती है। शिक्षित समाज वर्ग ही जन साधारण का आदर्श होता है। कला के समेकन द्वारा जीवंत ज्ञान प्रदान करना व शिक्षण को सरल बनाकर समाज में; समस्त नागरिक द्वारा, भारत को एक वैश्विक ज्ञान का महाशक्ति बनाना है। आज के इस युग में ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान द्वारा ही हम विकसित हो पायेगें। अगर ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान हमारा खुद का नहीं विकसित होगा तो हम दूसरों की तरफ ही ताकते रहेगें। ज्ञान में विश्व को बदलने की 'शक्ति' है जो 'उर्जा' व 'पहचान' प्रदान करती है, वहीं कलाओं में वो शक्ति, क्षमता व निपुणता होती है जो उस उर्जा, पहचान को आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्ति का मार्ग सुझाती हैं। कलाएँ ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को जोड़ते हुए परम्परा को जन्म देती हैं, अर्थात बिन्दुओं के समान आगे बढ़ते हुए सभ्यता व संस्कृति रूपी 'रेखा परम्परा' का निर्माण करती हैं, जो समाज में आधार (Base) का काम करती है, जिस पर सम्पूर्ण मानव जाति का जीवन टिका होता है। किसी समुदाय के परिवेश, समाज, राष्ट्र की संस्कृति व सभ्यता की पहचान एवं संरक्षण कलाओं द्वारा ही सम्भव हुआ। ऐतिहासिक जानकारी के प्रमुख स्त्रोत में कला के अनगिनत उदाहरण द्वारा ही तत्कालीन स्थिति, (सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक) का ज्ञान संभव हो पाया। कला प्रत्येक युग में मानव हित में ही अपनी पूर्णता समझते हुए मानव जीवन के साथ अग्रसर रहीं नि:सन्देह वह आगे भी मानव का कल्याण ही करेगी।

संदर्भग्रन्थ–

i- बी.बी.सी न्यूज, इंसान की किस नस्ल ने आग जलाना पहले सीखा, 21 सितम्बर 2018, बी.बी.सीन्यूज.कॉम।
ii- मिश्र डॉ. धनजय कुमार, संस्कृत वाङगयमय में वर्णित चौसठ कलाओं की उपयोगिता, संस्कृत सेवा सदन, 19 अगस्त 2019.
iii- शर्मा प्रो. गोविन्द प्रसाद, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020: दिशा और दृष्टि, पुस्तक संस्कृति, नवम्बर–दिसम्बर 2020, पृष्ठ संख्या–3
iv- शान्तिनिकेतन, शोकेस, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्राहालय, नई दिल्ली।
v- Sourse-Wikipedia,https://lalitkal.gov.in
vi- बसु नन्दलाल, सुब्रह्मण्यम सी.एन., एकलव्य
vii- Sourse-Wikipedia
viii- दृष्टि द विजन, नई शिक्षा नीति, 2020, 25 अगस्त 2020, माध्यम इन्टरनेट।
ix- aajtak.in, education, नई शिक्षा नीति: पढ़ाई, परीक्षा, रिपोर्ट कार्ड सब में होंगे ये बड़े बदलाव, दिनांक 30 जुलाई 2020, अपडेट 7: 19 ए.एम आईएसटी
x-संदर्भ– कला समेकित शिक्षा अवधारणा प्रतिलिपि, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा।
xi- वारिस हसन, मुईन डॉ. सैयद अब्दुल, कला शिक्षा–2 (तृतीय सत्र)।
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी), महन्द्रू, पटना (बिहार), द्वारा प्रकाशित एवं बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पबलिशिंग कॉरपोरेशन द्वारा आदेशित तथा राजधानी ऑफसेट प्रिंटर्स, त्रिपोलिया पटना–07 द्वारा मुद्रित, प्रथम संस्करण–2014, ISBN-978-93-84709-08-2
राजस्थान में आधुनिक कला के बढ़ते कदम' डॉ अमित वर्मा, अतिशय कलित, vo1-2, pt, B, Sr4, 2013
xii- बसु नन्दलाल, सुब्रह्मण्यम सी.एन., एकलव्य